International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सल्तनत काल में दास प्रथा–एक ऐतिहासिक विवेचना

प्रो0 के0 डी0 शर्मा
पूर्व प्राचार्य
एन0आर0ई0सी0
कॉलेज, खुर्जा (उ0प्र0)

शानू
शोध–छात्र
एन0आर0ई0सी0
कॉलेज, खुर्जा (उ0प्र0)

सारांश

जैसे– जैसे सभ्यता का विकास हुआ वैसे– वैसे सभ्यताओं के साथ अनेक कुरीतियां भी पनपी जैसे सती प्रथा, जाति प्रथा, दास प्रथा आदि। दास प्रथा के अन्तर्गत व्यक्ति का प्रयोग एक पशु समान होने लगा और व्यक्ति के अपने कोई अधिकार न रहे उसको बलपूर्वक या इच्छा के विरूद्ध भी कोई भी कार्य करने को बाध्य किया जा सकता था। और अपने स्वामी की सेवा करना ही उसका धर्म माना जाता था। वह किसी हाल में भी उसकी आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकता था। उसका जीवन एक अभिशाप भी था और वरदान भी। जैसे गौरी ने अपने पुत्र न होने पर दासों को महत्वपूर्ण समझा। जिस समय आर्य भारत में आये उस समय वे एक जाति के रूप में संगठित थे परन्तु बाद में आवश्यकता के अनुरूप उन्होंने सम्पूर्ण समाज को चार वर्णों में विभाजित किया। ऋग्वेद आर्यो के लिए श्वेत और अनार्यो के लिए दास दस्यु अथव कृष्ण जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।[1]

मूल आलेख

दास प्रथाा से तात्पर्य उस प्रथा से है जिसमें कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के अधीन सम्पत्ति के रूप में रहता है और उसके कोई अधिकार नहीं होते है। वह निजता और स्वतंत्रता से रहित व्यक्ति होता है। उसकी इच्छाएं भी अपने स्वामी पर आश्रित होती है। उसका स्वामी उससे सभी प्रकार के कार्य करवा सकता है जो कि उसका कर्तव्य माना जाता है।

प्राचीन काल से विश्व की विभिन्न महत्वपूर्ण सभ्याताओं में दास–प्रथा विद्यमान थी भारत भी इस प्रथा से न बच सका अर्थात् भारत में भी प्राचीनकाल से ही दास प्रथा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्यमान थी। यूनान, रोम तथा चीन की सभ्यताओं में भी दास प्रथा दिखाई पड़ती है पर विदेशी यात्रियों को समझने में भूल का आभास होता है जैसे मेगस्थनीज ने अपने विवरण में लिखा है कि भारत में दास नहीं थे जबकि भारतीय ग्रंथों तथा स्त्रोतो में दासों क विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है इसलिए मेगस्थनीज की दासों के विषय में राय कुछ अलग प्रतीत होती है जोकि विवाद का विषय है।[2]

भारत में दास प्रथा की प्राचीनता ऋग्वेदिक काल तक जाती है। ऋग्वेद में दास, दस्यु तथा असुरों का उल्लेख आर्यो से भिन्न वर्ण के रूप में किया गया ह। ऋग्वेद काल में आर्य ने अनार्यो को पराजित कर दास बनाया और विजित प्रदेश में अपने राज्य स्थापित किये। ऋग्वेद में अनेक मंत्रों में दास प्राप्ति की प्रार्थना की गई है। जैसेः– ''मुझे एक सौ गर्दभ, एक सौ भेड़े और एक सौ दास दो'' और कुछ ऋचाओं में दासों को उपहार में देने का भी उल्लेख है।[3]

ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के चतुर्थ अध्याय में ''मैं वित्र हूँ। मैं गौ और अश्व का रक्षक हूँ। बलबर्थ नामक दास के समीप से मैनें सौ गौ और अश्व पाये थे। वायु, ये सब लोग तुम्हारे ही है। यह इन्द्र और देवो के द्वारा रक्षित होकर आनन्दित होते है'' कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि हड़प्पा सभ्यता में भी दास प्रथा विद्यमान थी। वहाँ से प्राप्त मकानों के आकार के आधार पर वह विद्वान यह मानते है क्योंकि वहाँ अधिकतर स्थल गढ़ी या नगर तथा आवास क्षेत्र में विभाजित थे।

उत्तर वैदिक काल में दासो की संख्या और स्वरूप के बारे में जो प्रसंग आए है उनमें केवल धुंधला सा चित्र उभरता है एक प्रसंग में आए दास प्रवर्ग का अर्थ सम्पत्ति या दासों का समूह किया जा सकता है। महाभारत में जिन दासों का वर्णन है वे सभी अनार्य न थे। संभवत इस समय तक अनेक अनार्य व्यक्ति भी आर्यों के समाज का अभिन्न अंग बन गए थे। कुछ विद्वानों का मत है कि राम और कृष्ण दोनों में शुद्ध आर्य रक्त न था। इस काल में दास का स्वामी उसकी पत्नी का भी स्वामी समझा जाता था।[4] महाभारत में दासों के कई प्रकार बताये गये है जैसे– परिवार में उत्पन्न दास, क्रीत दास, युद्ध में बने दास भेंट स्वरूप मिलें दास विविध दास आदि।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बौद्ध तथा जैन साहित्य में भी दासों के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है बौद्ध तथा जैन धर्म के उदय के साथ– साथ दासों के स्वरूप में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। त्रिपिटक के अनुसार दास को कोई वैधानिक संरक्षण प्राप्त नहीं है। दास स्वंय ही किसी सम्पत्ति का अंग था अतः दास को सम्पत्ति रखने का अधिकार नहीं था।[5]

गुप्तकाल में भी दासो के विषय में जानकारी प्राप्त होती है इस समय सभी शूद दास नहीं थे परन्तु निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गुप्तकाल में कछ शूद दास थे। दास दासियों से युक्त राज्य का भोग करना उत्कृष्ट साधना का फल माना जाता था शांति पर्व में कहा गया है कि शूद सृष्टि प्रजापति ने अन्य तीनों वर्गो के दास के रूप में की, जबकि नारद तथा बृहस्पति दोनों ने यह स्पष्ट किया है कि दास केवल अपवित्र कार्यो में लगाए जाते थे अतः इस बात का कोई प्रमाण नहीं है। यदि दासों के इतिहास पर प्रकाश डाला जाए तो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक दासता का मूल कारण युद्ध था[6] और युद्ध के द्वारा ही दासो को प्राप्त किया जाता था। इसी कारण धीरे– धीरे ऐसे अभियान और अपहरण, दासों को प्राप्त करने के प्रधान माध्यम बन गए।

यूनानी कवि होमर के महाकाव्यों इलियड व ओडिसी में दासता के पतन तथा अस्तित्व का उल्लेख है यूनान में दास बहुत बड़ी संख्या में थे। यूनानी समाज व राज्य में दासों की एक निश्चित व महत्वपूर्ण भूमिका थी। अरस्तु के ग्रंथ 'पॉलिटिक्स' दासता सन्दर्भित अनेक दृष्टांत दिये है उनके अनुसार प्रकृति ने स्वभावतया शासक एवं दासवर्ग का सृजन किया है। इसी प्रकार चीन तथा मिस्त्र में भी दासों के विषय में काफी साहित्य उपलब्ध होता है।

आठवी शताब्दी ई0 के प्रथमार्थ में सिंध पर अरबों ने आक्रमण करके एक प्रकार से भारत में मुस्लिम आक्रमणों की नीव डाल दी जिसकी परिणति अन्ततः भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के रूप में ही कालान्तर में दिखायी पड़ी।

भारत में इस्लामी राज्य की स्थापना के साथ ही यहाँ मुस्लिम दास प्रथा का स्वरूप अधिक स्पष्ट हुआ। भारत में तुर्की राज्य के संस्थापक शासक दास ही थे। सल्तनतकालीन राजनीति में दासों का बड़ा महत्व रहा है। इस कारण यह प्रथा और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अधिक जिज्ञासा, आकर्मण एवं रहस्य उत्पन्न करती रही और शोधकर्ताओं ने इस विषय पर शोध करने की जिज्ञासा जागृत हुयी।

पूर्व मध्यकाल में भारतीय उपमहाद्वीप तो स्वयं ही त्रिपक्षीय संघर्ष के तूफानों को झेल रहा था। इस प्रकार समस्त गुप्तोत्तरकालीन भारतीय इतिहास युद्धों से अपरिचित नहीं था बल्कि अस्थिरता एवं उपद्रव के युग में सांस लेने के लिए विवश था। युद्धों की यह बहुलता पराजितों को दास जीवन में फंसने के लिए विवश कर देती थी। इन युद्धों में बड़ी संख्या में लोग बंदी बनाये जाते थे। यहाँ तक कि कभी–कभो एक ही युद्ध में 20000 से 50000 लोगों को दास बना लेने के प्रमाण मिलते है। उत्तरी भारत आगे चलकर महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी एवं कुतुबुद्दीन ऐबक के भीषण आक्रमणों का शिकार बना। दक्षिण भारतीय राजा सिलोन के राजाओं से, अपनी सम्प्रभुता को स्थापित करने के उद्देश्य से युद्ध में उलझे हुए थे और भारतीय उपमहाद्वीप तो स्वयं ही त्रिपक्षीय संघर्ष के तूफानों को झेल रहा था। ऐसे हमले तथा युद्ध बंदियों के कारण दास व्यापार में वृद्धि की बात इन इतिहासकारों ने भी स्वीकार की है।[7]

सल्तनत काल में दास प्रथा सम्बन्धी एक अन्य तथ्य भी दिखाई देता है। वह है पाश्चात्य व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला दास व्यापार। यह दास व्यापार सल्तनत काल में दास प्राप्ति का बड़ा साधन था। दास व्यापार करके उक्त पाश्चात्य देश खूब मुनाफा कमाते थे। भारत के तटवर्ती इलाकों खासतौर से दुर्भिक्ष पीड़ित इलाकों से ढेंरों लोगों को पकड़कर ल जाना और उन्हें विदेशों में बेचना तथा बाहर के मुल्कों से असहायों को पकड़कर लाना और देश के अंदर उन्हें बेचना उनके लिए बड़ा लाभप्रद व्यापार था।

सल्तनत काल में दासो का व्यापारिक इतिहास दासों के क्रय– विक्रय से अपरिचित नहीं था बसरा और बगदाद जैसे केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपनी पहचान बना चुके थे यहाँ ऊँची–ऊँची बोलियाँ दासों के क्रय तथा विक्रय के लिए लगायी जाती थी। भारत में भी दास प्रथा सम्बन्धी अनेक साक्ष्य इस समय प्राप्त होते है जैसेः– लेखपद्वति नामक ग्रंथ तथा ग्वालियर से प्राप्त राउलबेल अभिलेख में भी दासा के व्यापार की चर्चा की गई है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सल्तनतकालीन भारत में तुर्को का आक्रमण भारतीय इतिहास की एक परिवर्तनकारी घटना है। इन तुर्क आक्रमणों में हजारों की संख्या में दास बनाये गये। महमूद गजनवी ने भारत पर कुल 17 बार आक्रमण किया और अधिकांश हमलो में वह भारत से कुछ न कुछ ले जाता था जिसमें भारतीय लोगों को दास के रूप में गजनी ले जाना।[8] अपवाद स्वरूप न रहा होगा। इन लोगों को पकड़कर दास के रूप में बेचने का उद्देश्य अधिक धन कमाना था क्योंकि इतन बड़े पैमाने पर दास बनाने का उद्देश्य दास बाजार में विक्रय के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। भारत पर तुर्क आक्रमणों का यह सिलसिला मुहम्मद गोरी के समय में दासता के इतिहास में और अधिक महत्वपूर्ण बना जब अकेले कलिंजर से लगभग 50,000 भारतीयों को पकड़कर दासता में ढकेल दिया गया।[9] यद्यपि यह सही है कि इन युद्ध बन्दियों में से कुछ को वापस भारत खदेड़ दिया जाता था लेकिन भारत आकर इनकी और भी दुर्दशा होती थी। अलबरूनी लिखता है कि ऐसे युद्धबन्दी लोग जो मुस्लिम देशों में वापस आ जाते थे या किसी तरह बच निकलते थे। उनको अपने ही देश में अत्यन्त कठोर प्रायश्चित करने पड़ते थे। ये लोग इस प्रायश्चित को सुनकर ही सम्भवतः काँप जाते थे। ऐसे लौटे हुए व्यक्ति को सड़े हुए गोबर के गड्ढे मे तब तक आकण्ठ डूबे रहना पड़ता था। जब तक कि उनमें कीड़े पड़ने की स्थिति न आ जाए। तभी अशुद्धि से मुक्ति सम्भव थी। पूर्व मध्यकाल में दास –दासियों को उत्पादन के कायो में नियोजित करने के प्रमाण अपवाद स्वरूप नहीं है इस सम्बन्ध में लेख पद्वति ही दासों को कृषि में नियोजित करने की बात करती है।[10]

सल्तनतकाल में रहने वाला एक अन्य बड़ा समूह दासो और घरेलू नौकरों का था। दीर्घ काल से ही भारत के साथ–साथ पश्चिम एशिया और यूरोप में दास प्रथा का अस्तित्व समाहित था। दास परिवार में जन्में, खरीदे गए, पाये गए एवं पारम्परिक रूप से अपनी विशिष्ट परिस्थितियाँ हासिल करने वाले विभिन्न प्रकार के दासों की स्थिति के बारे में हिन्दू शास्त्रो में चर्चा की गई है।

1192 ई0 में मुहम्मद गोरी ने पथ्वीराज को परास्त करके बन्दी बनाने के पश्चात असहाय अजमेर निवासियों को पकड़कर दास बना लिया और उन्हें दासों के बाजार में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ले जाकर बेच दिया जाता था।[11] बाइजेण्टाइन साम्राज्य छठे तथा सातवी शताब्दी में अपने अस्तित्व के संघर्षरत था।[12] सुमेरियन सभ्यता में लोग युद्ध के माध्यम से अधिकांश लोगों को दासता की बेड़ियाँ पहना देते थे।[13] चूंकि व्यक्ति के लिए युद्ध का सबसे घातक परिणाम उसकी हत्या हो सकती थी इसलिए उसके प्राणों को इस संकट से मुक्ति दिलाने के बदले में व्यक्ति की सभी स्वतंत्राओं का अपहरण किया जा सकता था। युद्ध के मूल से उत्पन्न दासता का सम्भवतः यही औचित्य मूलक अर्थ भी था।

सल्तनत काल में गुलाम वंश के नाम से जिस वंश की स्थापना हुई उस वंश को स्थापित दासो के द्वारा ही किया गया था गोरी ने स्वयं अपने दासों को अपना पुत्र कहकर पुकारा था वही आगे चलकर उसके ख्याति का कारण बने आगे के सुल्तानों में भी दासों की सहायता से ही प्रसिद्धी प्राप्त की थी जिसमें कुतुबुद्दीन से लेकर फिरोजशाह तुगलक तक सब को दासों की सहायता से ही शासन किया था दास प्रथा में महत्वपूर्ण सुधार फिरोजशाह तुगलक के द्वारा किया गया। उसी ने दासों के विभाग दीवाने बंदगान की स्थापना की और दासों को उसके कार्यो के अनुरूप बांटा। उसके दरबार में 1,80,000 द्वारा थे उसने दासों के नियति पर प्रतिबंध लगाया और उनके जीवन में महत्वपूर्ण सुधार किये। जहाँ कई वंशो को स्थापित करने में दासों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वहीं कई वंशों के विनाश का करण भी यही दास बनें।

आगे मुगल काल में भी दास प्रथा विद्यमान रही परन्तु जैसे– जैसे समय बीतता गया इन पर होने वाले अत्याचार बढ़ने लगे तब ब्रिटिश गर्वेमेन्ट ने 1833 के चार्टर अधिनियम के द्वारा भारत में दास प्रथाओं समाप्त कर दिया और 1843 में V^{th} एक्ट के द्वारा इसको गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रंथ एवं पाद टिप्पणियाँ

1. शर्मा : रीता ''प्राचीन भारत का इतिहास'' बोहरा प्रकाशन जयपुर
2. श्रीवास्तव के0सी0 ''प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति'' संस्करण (1999) पब्लिकेशन यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद पृष्ठ 161
3. 1, 92.8 'उपसिआभरयां यषसंसुवीर' दासप्रवर्ग रयिमश्व बुध्यम्
4. महाभारत 2, 63 – 28 – 35
5. जातक V – 178
6. राकिन, एडमण्ड, 'द पोलिटिकल इकनॉमी का स्लेवरी, नामक लेख कोलम्बिया विश्वविद्यालय के.ई.एल. मैट्रिक की पुस्तक स्लेबरी डिफेन्डड दृ द न्यूज आफॅ द ओल्ड साउथ 1963 के पृष्ठ 69– 88
7. यादव बी.एन.एस. : सोसाइटी एण्ड कल्चर इन नार्दन इण्डिया इन द ट्वेल्थ सेन्चुरी ए0डी0 इलाहाबाद 1973 पृष्ठ 73–74
8. द्विवेदी, लवकुश : ''कौटिलीय अर्थशास्त्र में दास, कर्मकार, विष्टि और शूद्र, जर्नल ऑफ गगानाथ झा केंद्रिय संस्कृत विद्यापीठ, जिल्द 41 भाग 1–4 इलाहाबाद 1985
9. वही लवकुश, पूर्वो।
10. लिखनाल्ली, विद्यापति के.सी. चट्टोपाध्याय मेमोरियल वाल्यूम इलाबाद पृष्ठ 54।
11. स्मिथ बी.ए. ''अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया ऑक्सफोर्ड 1957 पृष्ठ 403।
12. एण्डरसन, पेरी पैसेजेज फ्रम एण्टीक्विटी टू फ्यूडलिज्म, लन्दन 1974, पृष्ठ 268
13. तिवारी गंगा सागर, विश्वसभ्यता का वैज्ञानिक इतिहास, इलाहाबाद 1988 पृष्ठ 54।